इसाबेला मोंक

चित्र: जेनिस ली पोर्टर

होप

इसाबेला मोंक
चित्र: जेनिस ली पोर्टर
हिंदी: इंदुजी

हर वर्ष गर्मियों में मैं एक सप्ताहांत अपनी माँ की बुआ, पूगी, के पास उनके गाँव में बिताती हूँ. जैसे ही मैं कार से बाहर आती हूँ, पूगी बुआ हाथ बढ़ा कर मुझे उठा लेती हैं और कहती हैं, "म्म्म्, मैं तुम्हें खा सकती हूँ." मुझे लगता है कि पूगी बुआ प्यार से भरी हुई हैं और अपनी टिमटिमाती आँखों से धीरे-धीरे अपने प्यार को मुझ पर बरसाती हैं.

दूसरी कक्षा से पहले वाली गर्मियों में (अब मैं छटी कक्षा में हूँ) जो सप्ताहांत मैंने पूगी बुआ के साथ बिताया था वह मुझे सदा याद रहेगा. शनिवार की सुबह हम पूगी बुआ की उस गुलाबी कैडिलैक कार में बैठ गए जो उन्होंने फैंसी मे की प्रसाधन सामग्री सबसे अधिक मात्रा में बेच कर पुरस्कार में जीती थी,. हम नदी के साथ-साथ चलते हुए खुले बाज़ार में आ गए.

भीड़-भाड़ वाले बड़े बाज़ार मुझे हमेशा अच्छे लगते थे. पूगी बुआ को वहाँ कई मित्र मिल जाते थे. सबसे पहले हमारी भेंट मेरे प्रिय मिस्टर स्टीवार्ड से हुई. जब वह हँसते हैं तो उनका मुँह पिकेट-बाड़ जैसा लगता है. पूगी बुआ उन्हें मटका कह कर बुलाती हैं, क्योंकि उनकी तोंद मटके जैसी है. हमेशा कि तरह उन्होंने मुझे एक चैरी-लिकरीस और अपनी मुस्कान दी.
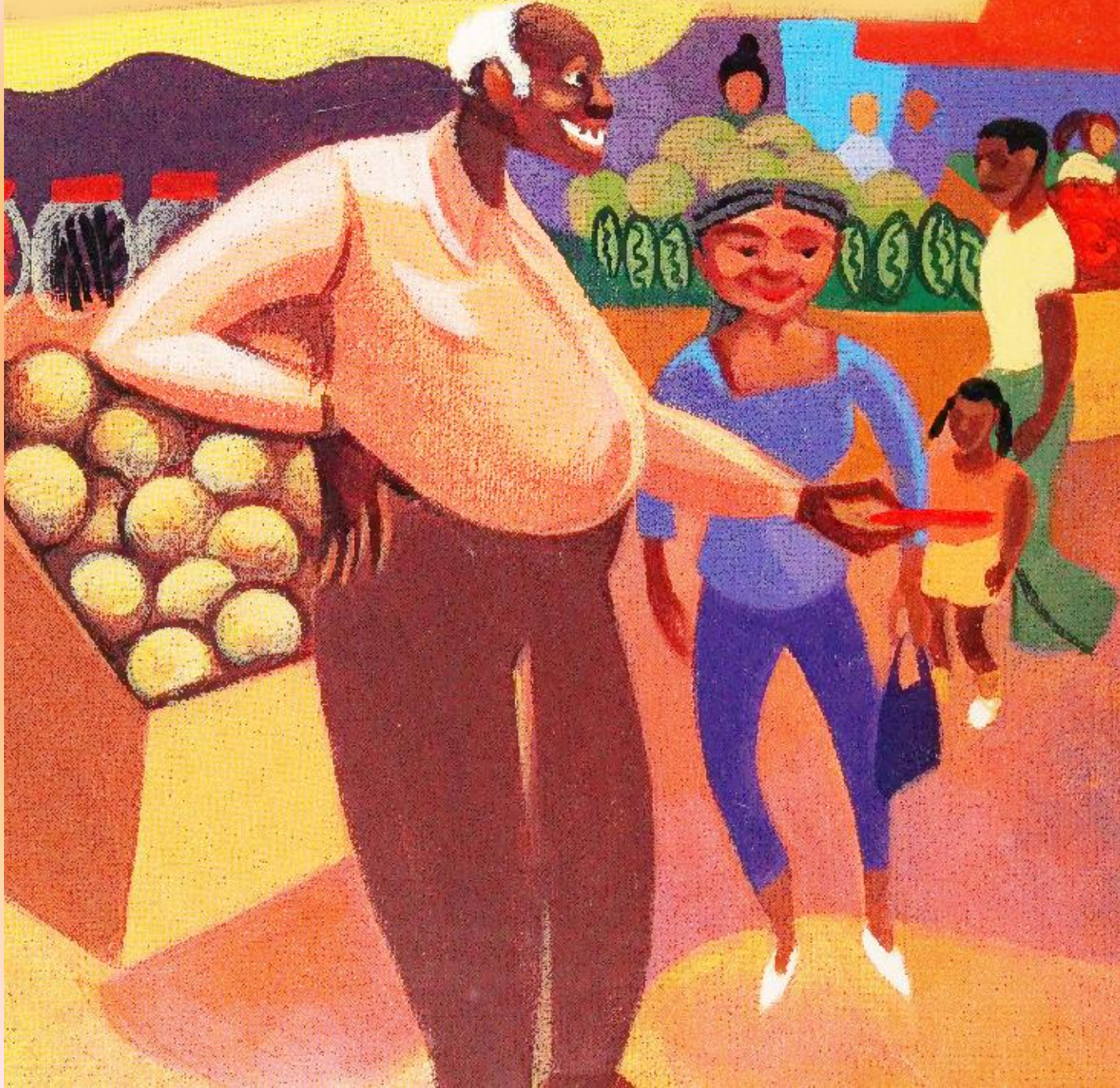
फिर मैं मिस टी-कप हिल से मिली. उनकी आयु तो पूगी बुआ की आयु के बराबर ही है लेकिन उनका आकार मेरे आकार समान है. पूगी बुआ ने कहा, “उसका असली नाम थैलमा है. लेकिन सब उसे टी-कप बुलाते हैं क्योंकि जब वह पैदा हुई तब वह इतनी छोटी थी कि उसकी माँ ने उसे लिटाने के लिए पालने की जगह एक टी-कप का उपयोग किया था."
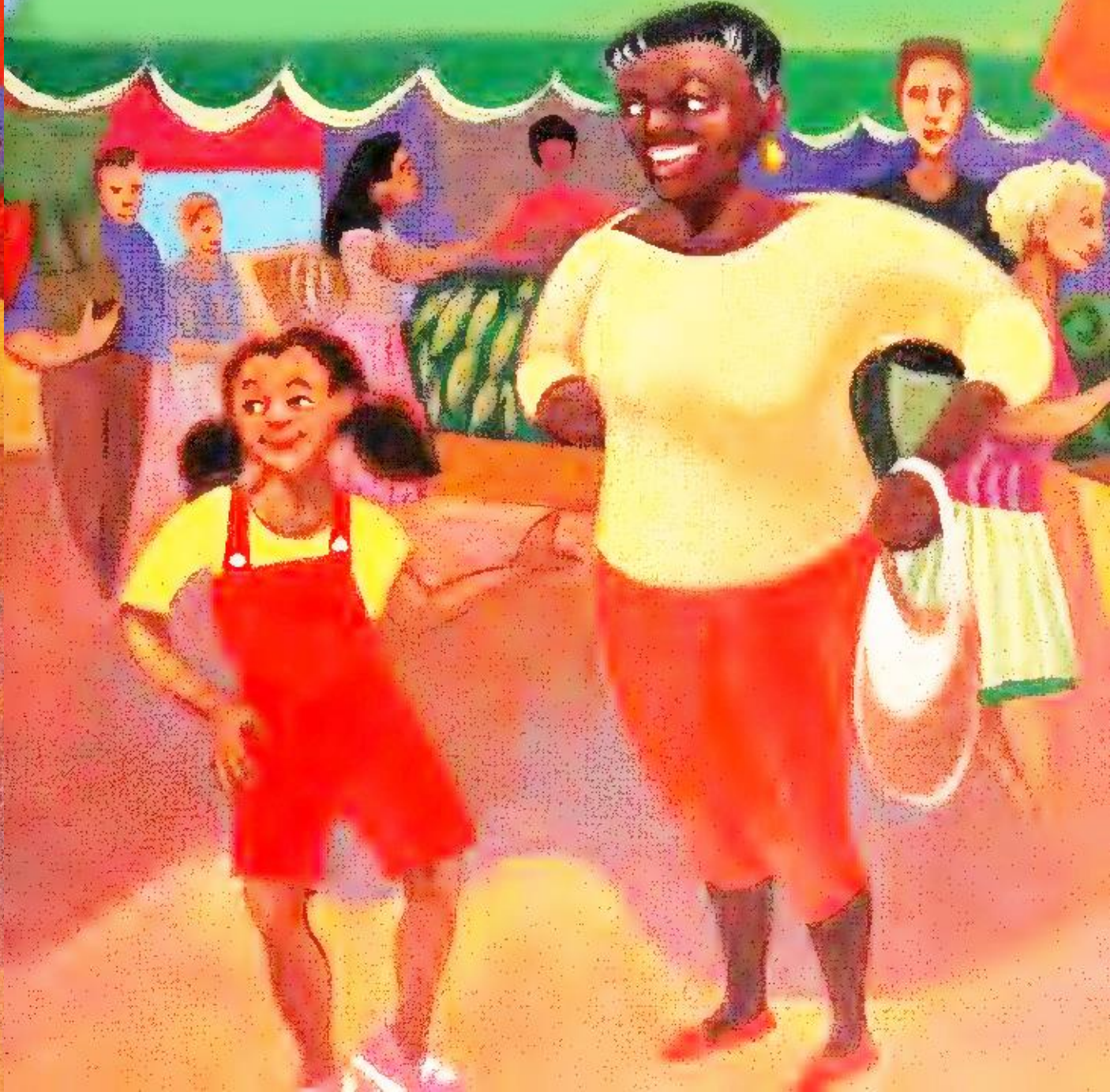
अचानक बाज़ार के दूसरी ओर से एक ऐसा आवाज़ आई जैसी स्टीम-ईंजन की सीटी की होती है:

“प्रूडैंस, प्रूडैंस निवैंस?” पूगी बुआ का वास्तविक नाम प्रूडैंस है. मेरे दादा जैक, जो बुआ के बड़े भाई हैं, जब वह छोटे थे तो सिर्फ पूगी बोल सकते थे. बस बुआ का वही नाम पड़ गया.
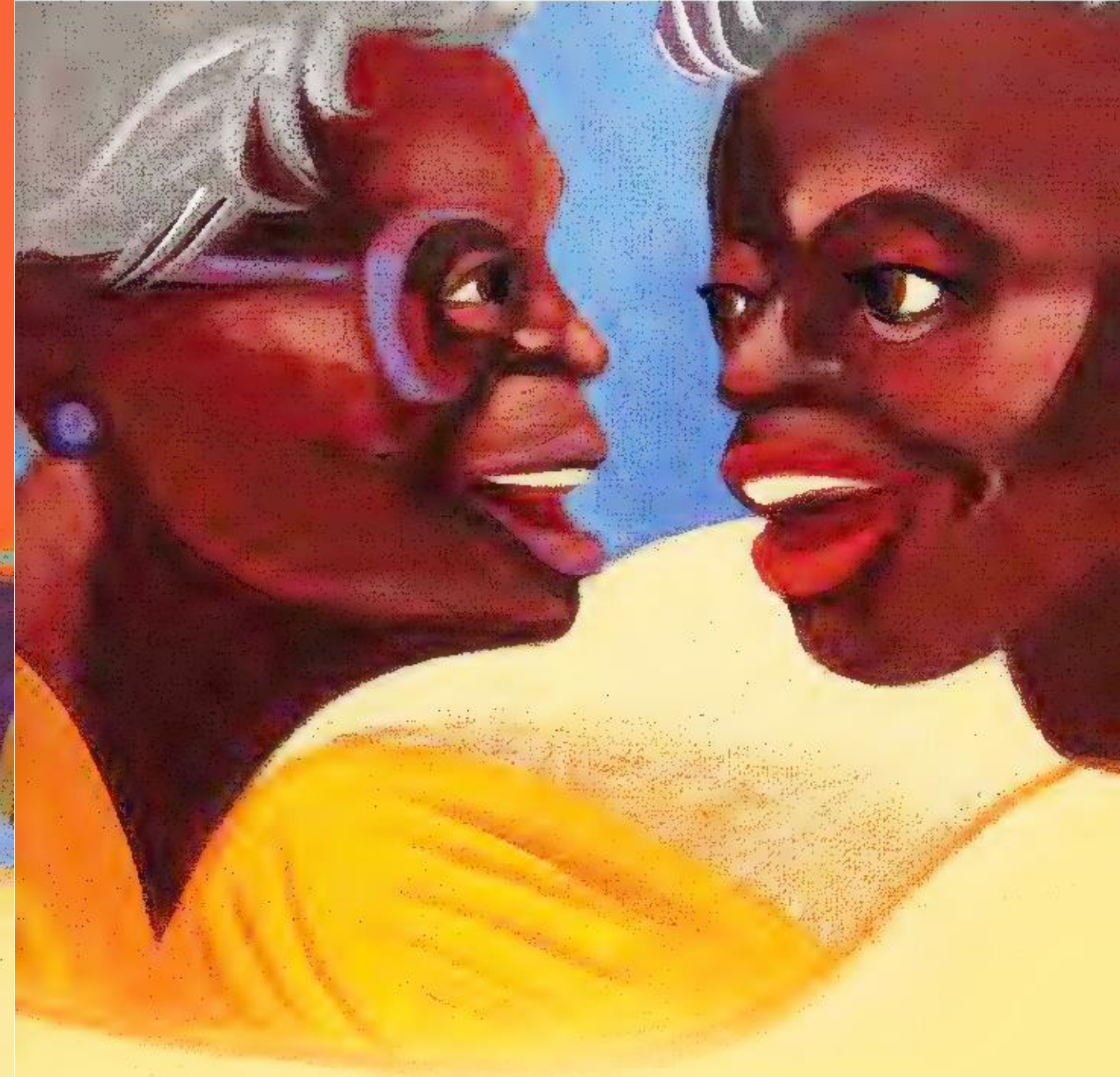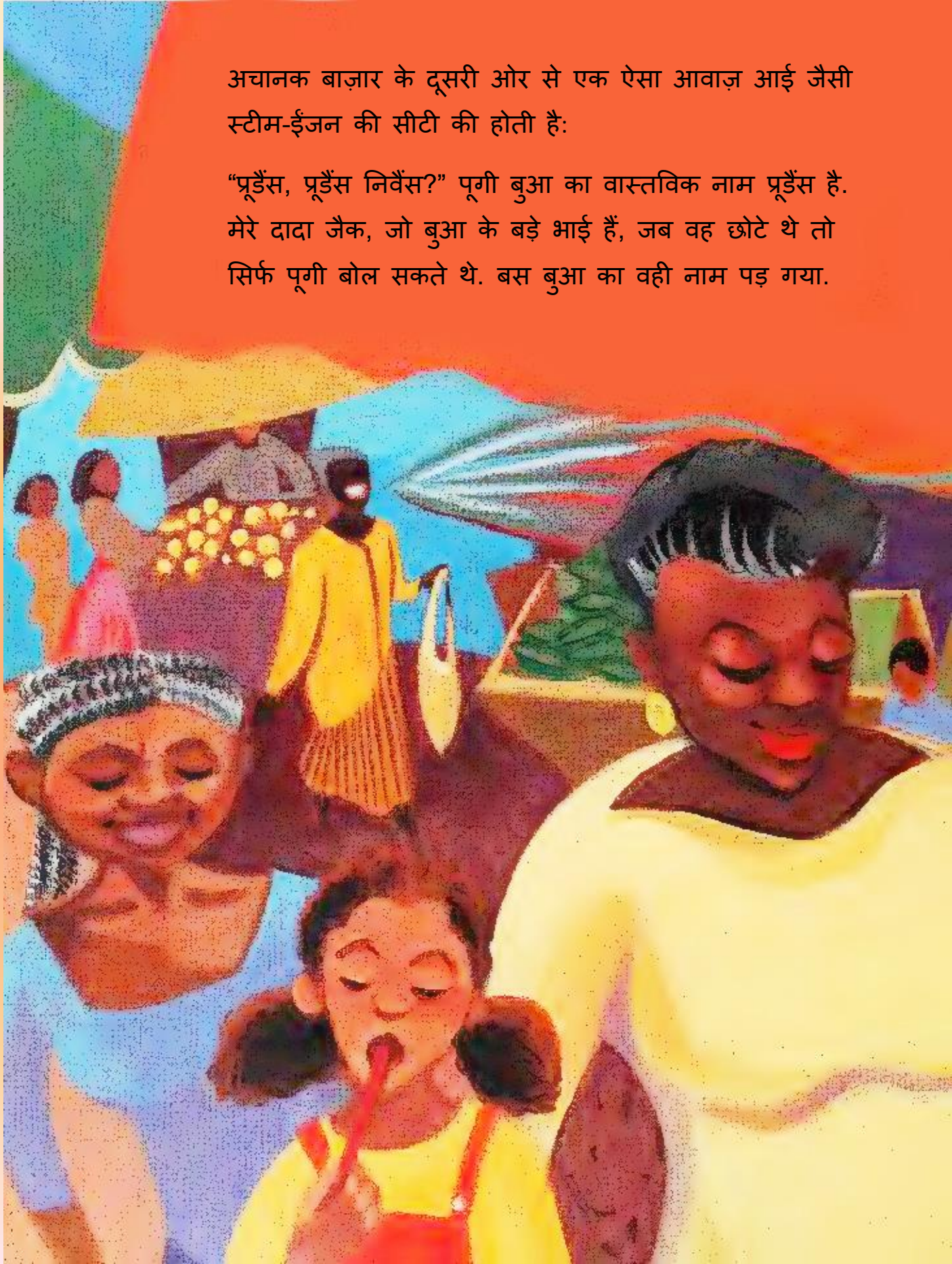
“अरे, कितने दिनों के बाद दिखाई दी हो!” मानवी स्टीम-ईंजन की सीटी ने कहा.

“तुम घर लौट आई, वायलैट? तुम तो बिलकुल पहले जैसी ही दिख रही हो!” पूगी बुआ ने उन्हें गले लगाते हुए कहा. मिस वायलैट और पूगी बुआ एक साथ बड़ी हुई थीं लेकिन मिस वायलैट गाँव से दूर चली गई हैं. बीच-बीच में, कुछ वर्षों के अंतराल पर, वह गाँव आती हैं.

दोनों आपस में बातें करने लगीं कि किस का देहांत हुआ था, किस का विवाह हुआ था और किस के घर बच्चों ने जन्म लिया था. फिर पूगी बुआ ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर कहा, “वायलैट, मुझे पूरा विश्वास है कि तुम यह अनुमान नहीं लगा सकती कि यह बच्ची कौन है.”
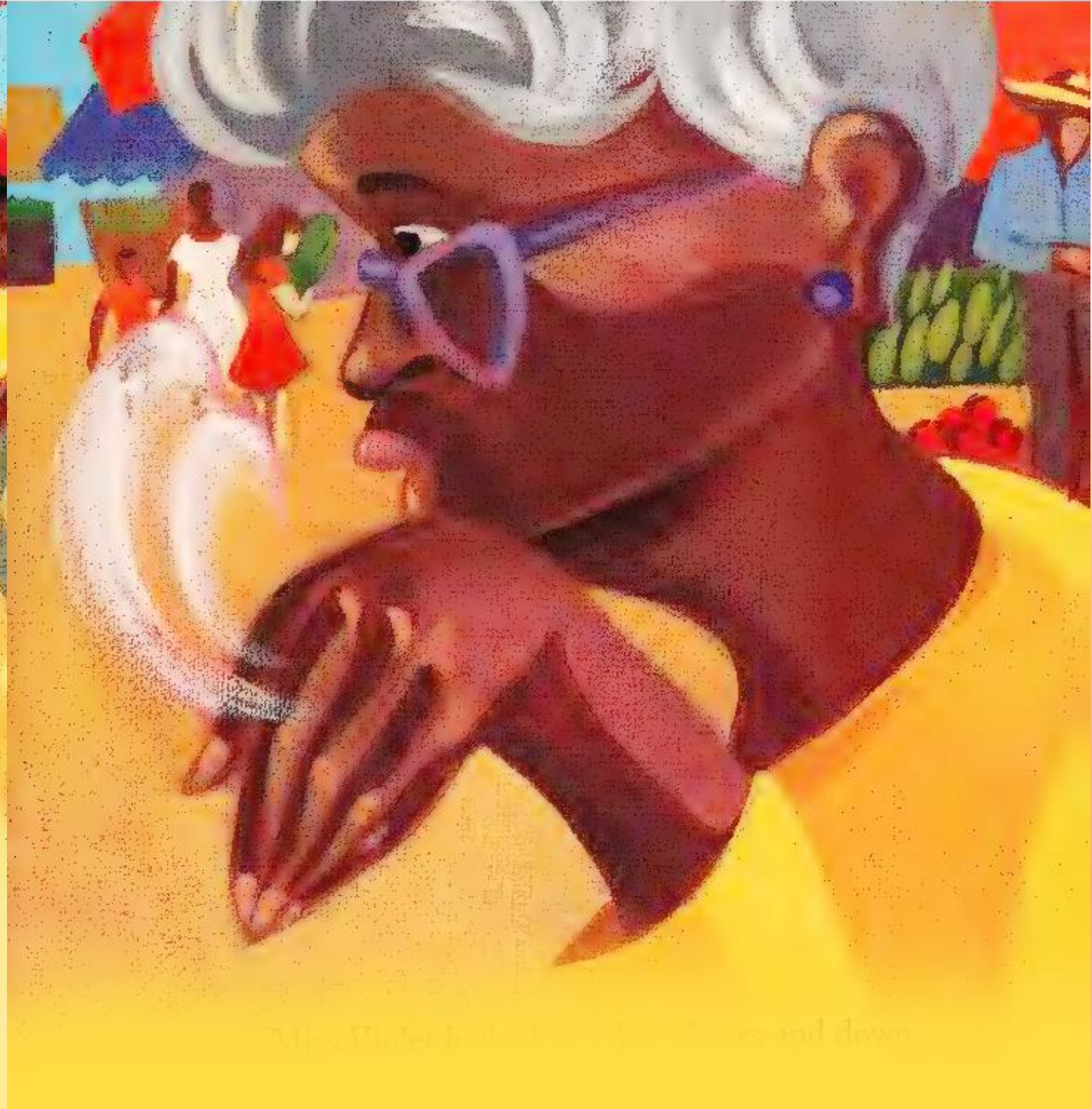
मिस वायलैट ने अपने चश्मे के ऊपर से, अपनी नाक की सीध में नीचे मेरी ओर देखा. उन्होंने मुझे इशारा भी किया, पूरा घूमने के लिए, फिर उन्होंने घोषणा, “प्रूडैंस, यह बच्ची, तुम्हारे परिवार के किसी सदस्य जैसी नहीं लगती.”

“यह ईव की छोटी लड़की है. तुम्हें ईव याद है न? मेरे भाई जैक की बेटी?” पूगी बुआ ने कहा.

“अरे हाँ,” मिस वायलैट ने संदेह भरी वाणी में कहा. “हाँ, अपनी माँ की तरह इसकी भी बड़ी-बड़ी, भूरी आँखें हैं.” मिस वायलैट अपनी दृष्टि मुझ से हटा न पा रही थी. वह पूगी बुआ की ओर झुकीं और धीमे से बोलीं, “हे भगवान, प्रूडैंस, क्या यह मिश्रित जाति की बच्ची है?”
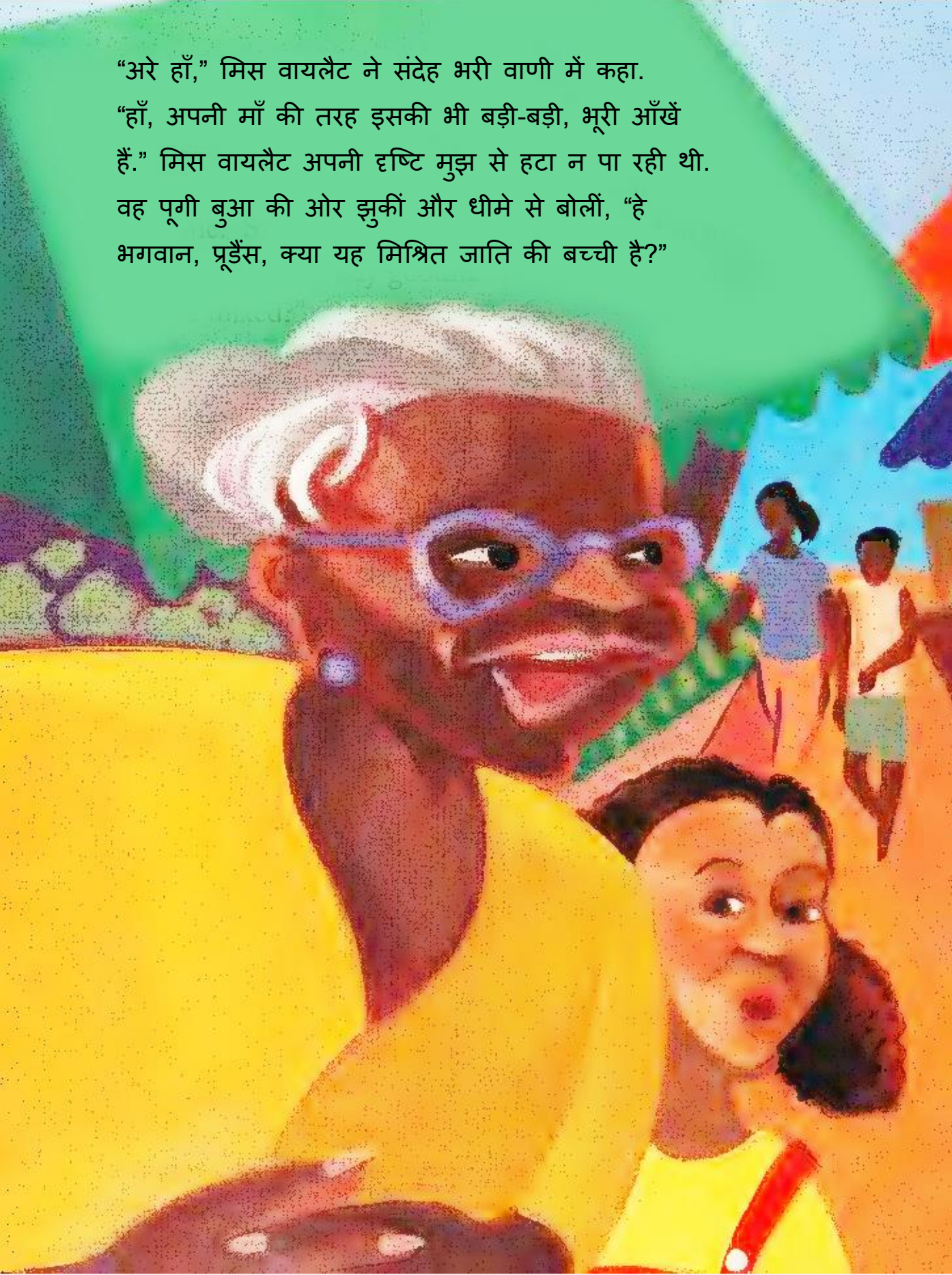
एक ट्रैफिक पुलिसमैन की तरह पूगी बुआ ने अपना हाथ ऊपर उठाया, अपनी आँखें घुमाईं और बड़ी तीखी आवाज़ में बोलीं, “वायलैट, तुम कह क्या रही हो?” उसके बाद दोनों ने एक-दूसरे को अलविदा कहा. हमने अपनी खरीदारी पूरी की और घर की ओर चल पड़े.
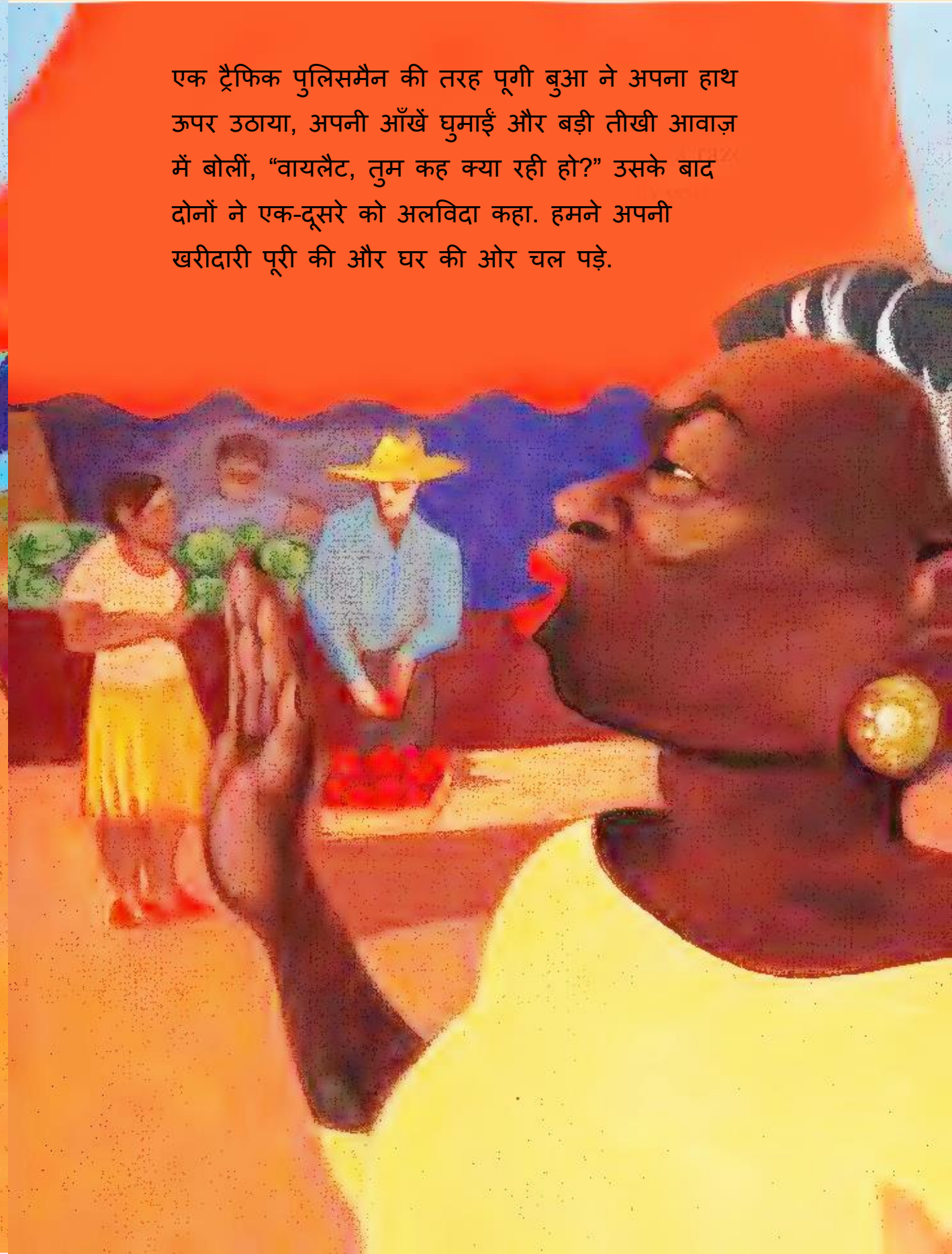
घर लौटते समय हम बिलकुल खामोश थे. मुझे याद नहीं कि कार में हम कभी इतने चुप रहे थे. आखिरकार मैंने पूछा, “मिस वायलैट की इस बात का क्या अर्थ था, ‘क्या बच्ची मिश्रित जाति की है?’”

पूगी बुआ ने एक हाथ से मेरे सिर को थपथपाया और कहा, “मिस वायलैट की बात को भूल जाओ.” लेकिन मैं नहीं भूली.

सारे रास्ते मैं मिस वायलैट की बात के बारे में सोचती रही. दुपहर का नाश्ता करते समय, ताज़ा, हरी फलियाँ तोड़ने में पूगी बुआ की सहायता करते समय, रात का खाना खाते समय, अपने दाँत साफ करते समय और यहाँ तक कि प्रार्थना करते समय भी मुझे मिस वायलैट के शब्द सुनाई देते रहे, “हे भगवान, प्रूडैंस, क्या यह मिश्रित जाति की बच्ची है?”

लेकिन जब मैंने पूगी बुआ की चप्पलों की टका-टक टका-टक आवाज़ हॉल से अपनी ओर आती सुनी तो मिस वायलैट की बात मेरे दिमाग से टका-टक बाहर चली गई.
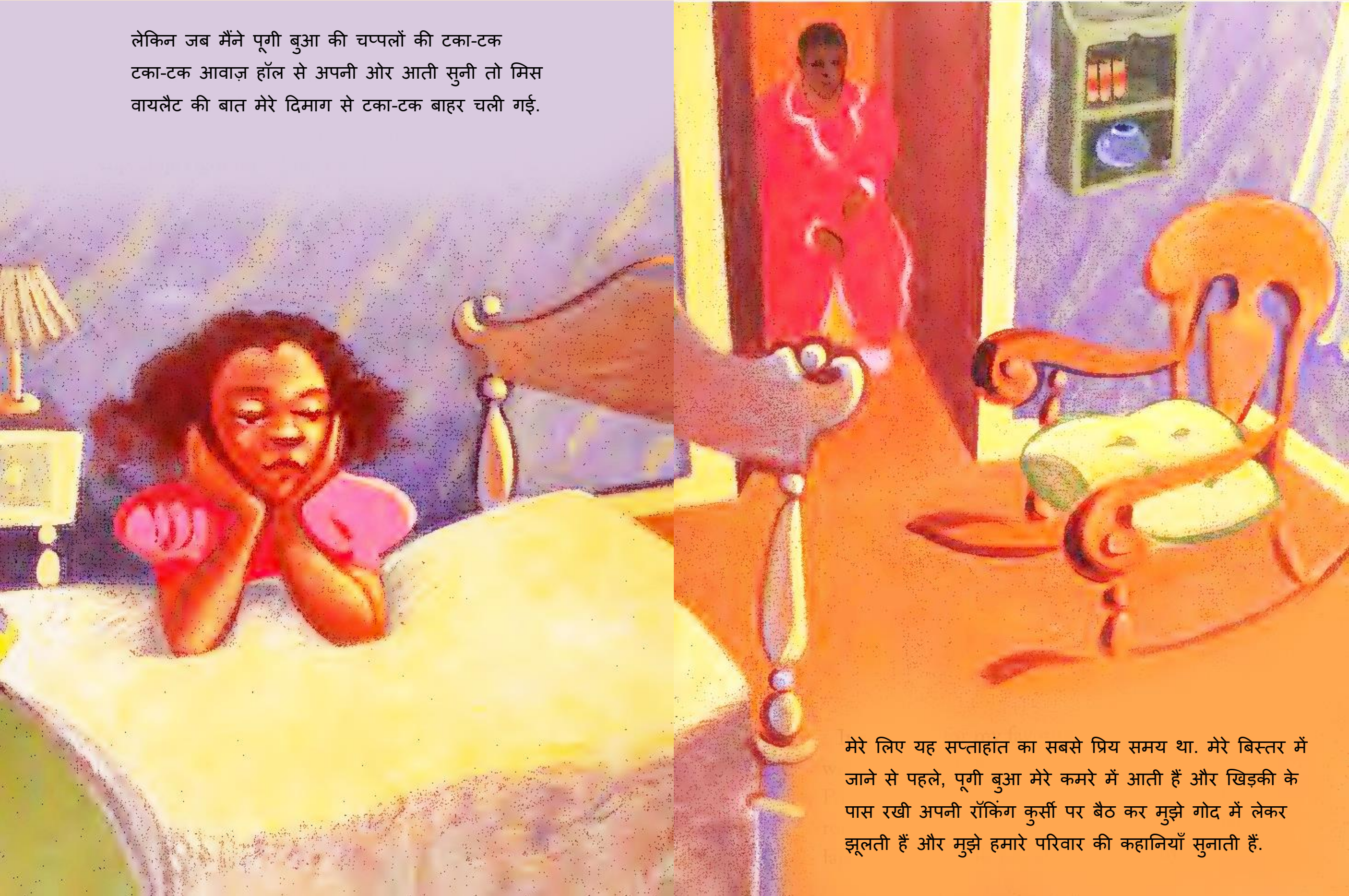
मेरे लिए यह सप्ताहांत का सबसे प्रिय समय था. मेरे बिस्तर में जाने से पहले, पूगी बुआ मेरे कमरे में आती हैं और खिड़की के पास रखी अपनी रॉकिंग कुर्सी पर बैठ कर मुझे गोद में लेकर झूलती हैं और मुझे हमारे परिवार की कहानियाँ सुनाती हैं.
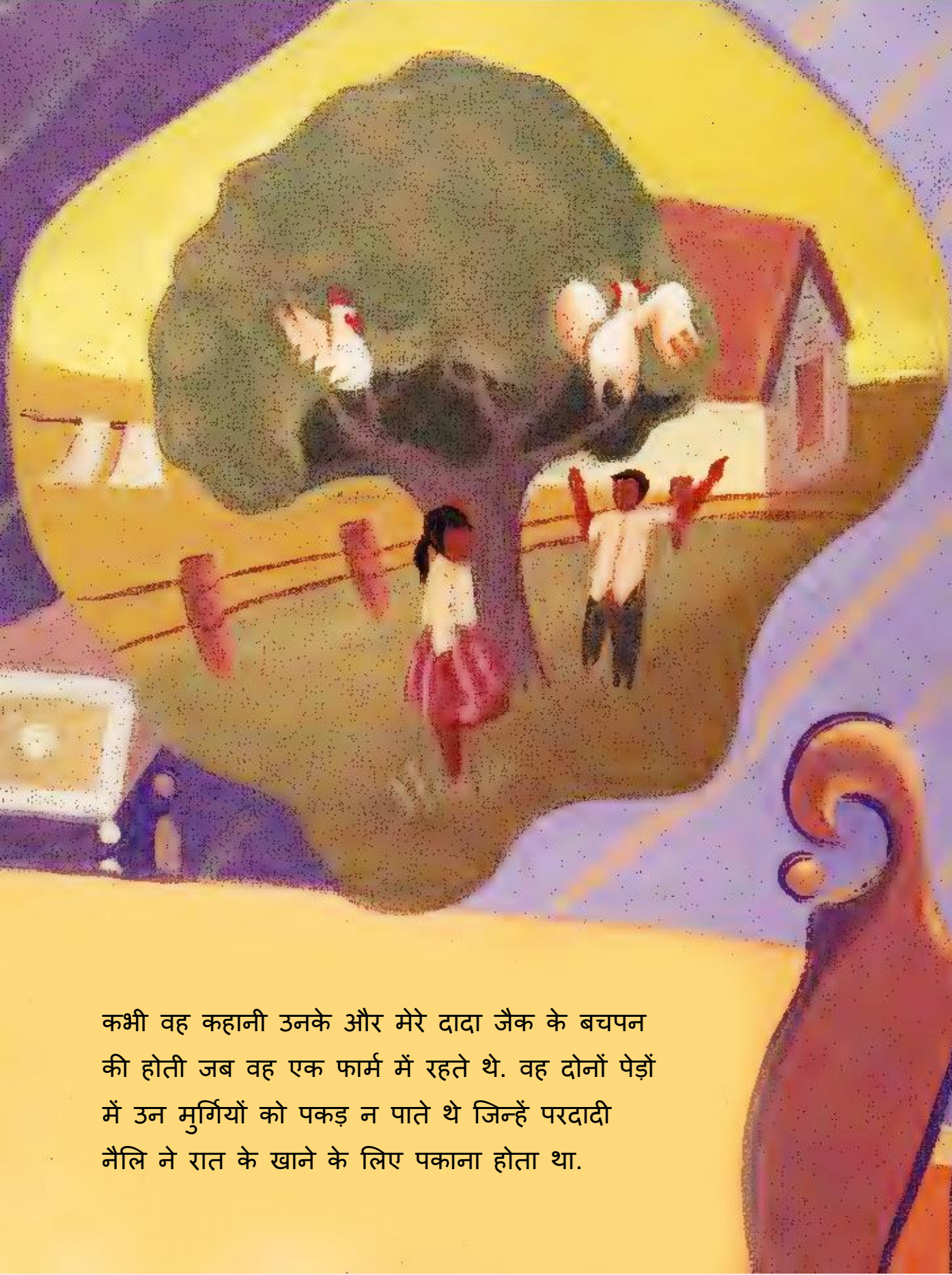
कभी वह कहानी उनके और मेरे दादा जैक के बचपन की होती जब वह एक फार्म में रहते थे. वह दोनों पेड़ों में उन मुर्गियों को पकड़ न पाते थे जिन्हें परदादी नैलि ने रात के खाने के लिए पकाना होता था.

कभी वह कहानी होती कि किस प्रकार उन्होंने मेरी दादी के शरीर पर सिर से लेकर पाँव तक टमाटर का रस मला था जब दादी की पीठ पर सफेद धारियों वाला बिल्ली का बच्चा चढ़ गया था. लेकिन वह बिल्ली का बच्चा नहीं था, एक स्कंक था.

कभी वह सिर्फ गुनगुनाती रहतीं और उनके दिल की धड़कन कोई कहानी जैसी लगती.
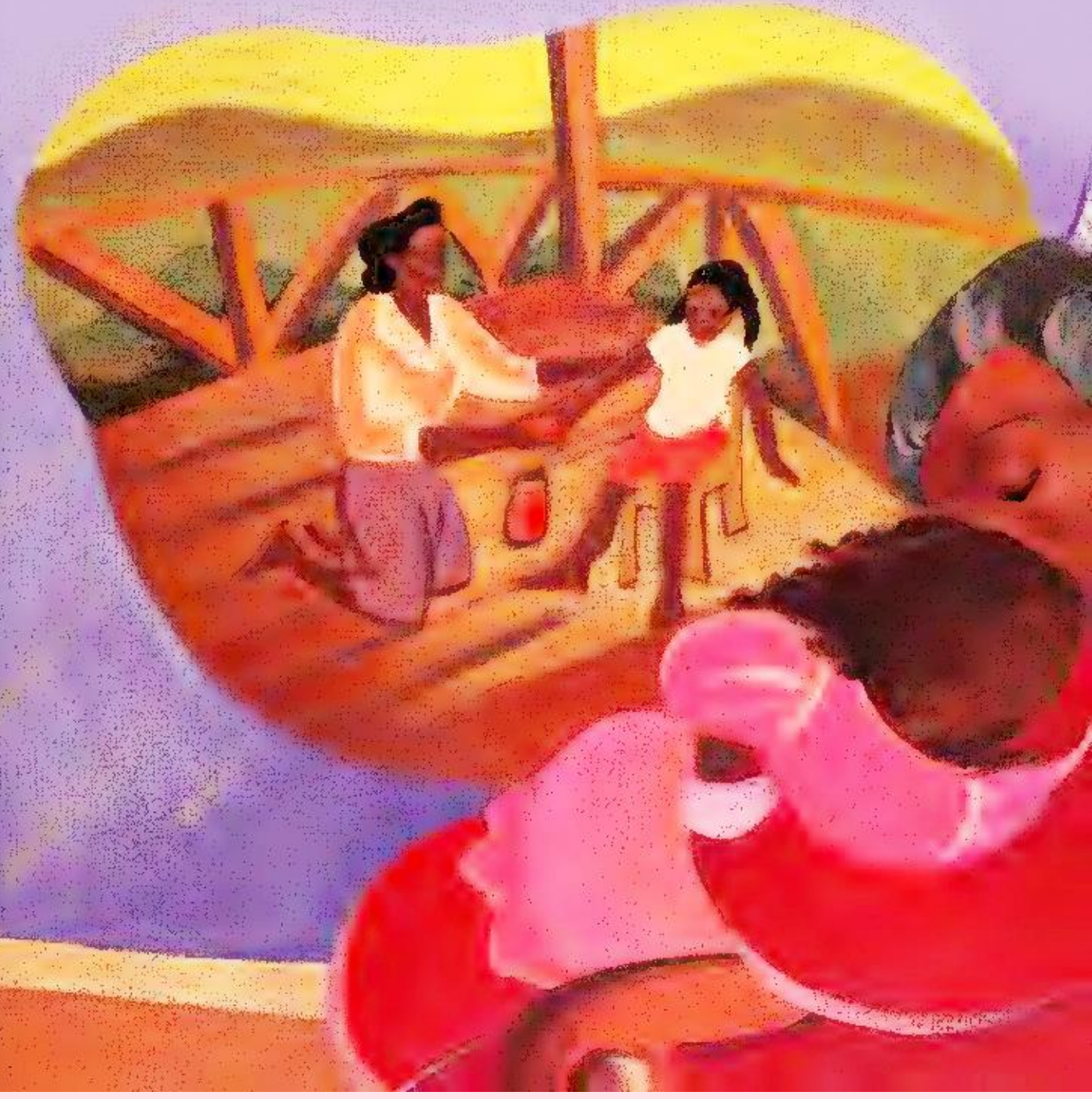
उस रात जब पूगी बुआ ने मुझे गोद में उठाया तो उन्होंने पूछा, “क्या तुम जानना चाहोगी कि तुम्हारा नाम कैसे रखा गया?” आज तक कभी कोई कहानी मेरे बारे में न थी. मैं इतनी उत्तेजित हो गई कि मैंने सिर्फ सिर हिला कर “हाँ” कहा. अपनी मधुर वाणी में वह सुनाने लगीं.

तुम्हें अपनी माँ की सुंदर भूरी आँखें मिली हैं. तुम्हारा सौम्य चेहरा अपने पिता पर गया है. तुम्हारे शरीर का रंग किसी स्वादिष्ट पदार्थ समान है, कोको को रंग जैसा या मेरे पकाये भूने हुए चिकेन जैसा या खुबानी के उस जैम जैसा जिसे बनाने में तुमने पिछली गर्मियों में मेरी मदद की थी.
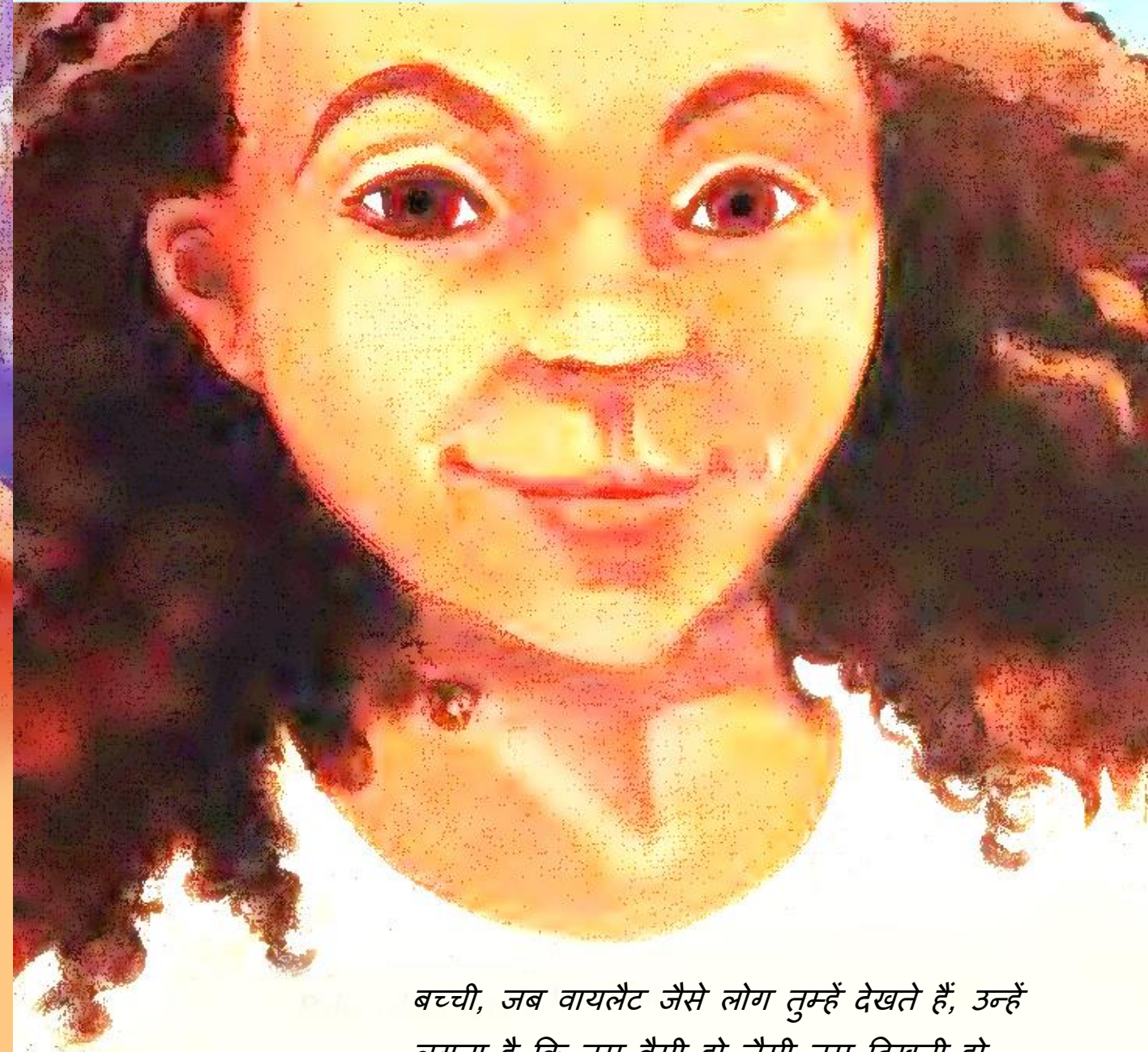
बच्ची, जब वायलैट जैसे लोग तुम्हें देखते हैं, उन्हें लगता है कि तुम वैसी हो जैसी तुम दिखती हो. लेकिन मैं ही जानती हूँ कि एक होप कैसे बनती है.

तुम्हारे पिता के परदादा-परदादी के परदादा-परदादी के विश्वास ने, कि एक दिन वह अपनी मेहनत से अपने सपने साकार कर पायेंगे, तुम्हें तुम्हारा रूप दिया है.
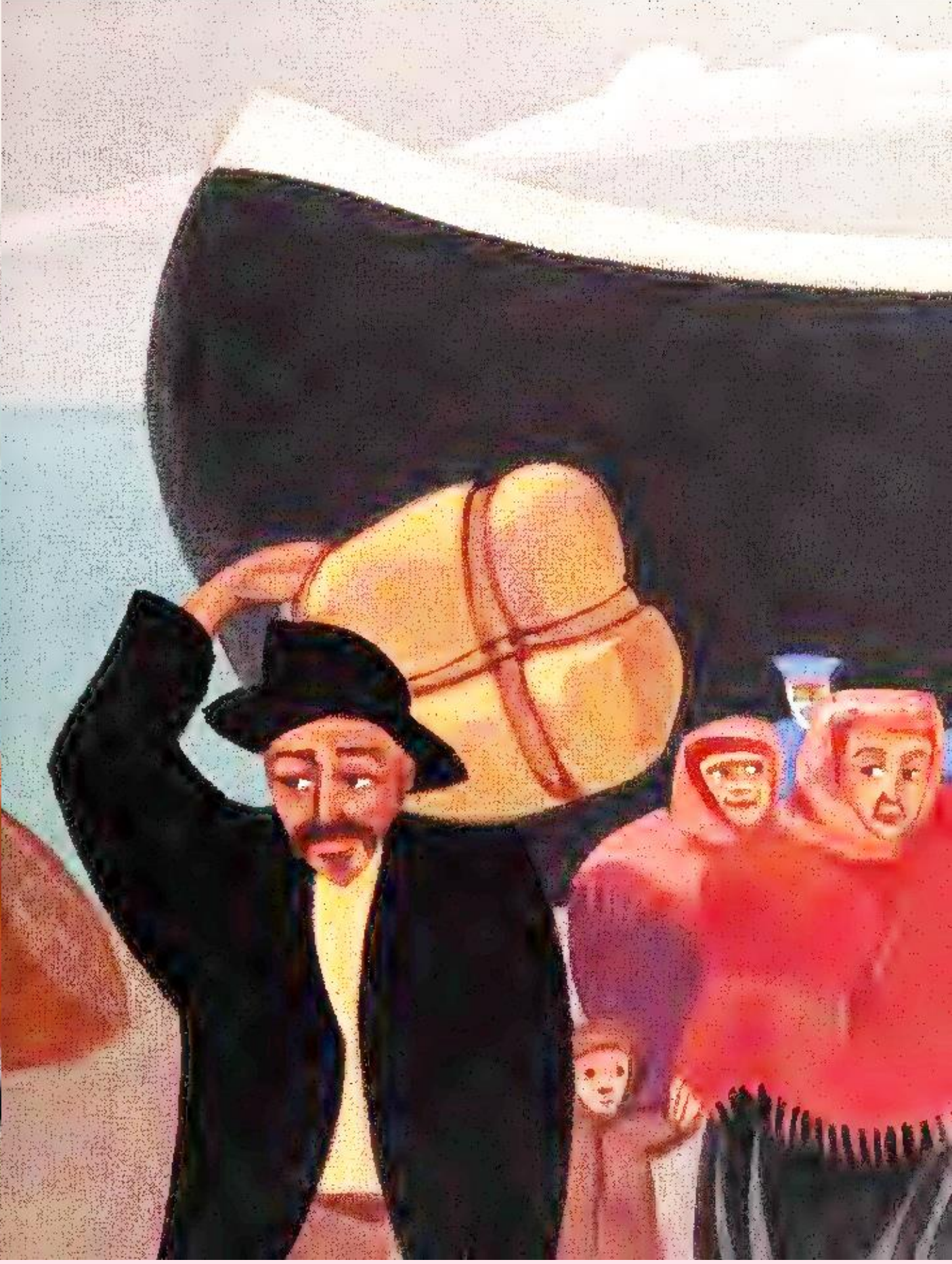
तुम्हारी माँ के परदादा-परदादी के परदादा-परदादी के विश्वास ने,
कि कभी न कभी अच्छे दिन आयेंगे, तुम्हें तुम्हारा रूप दिया है.

जिस विश्वास से तुम्हारे दादा जैक और दादी जेन ने घृणा, भय और अज्ञान का सामना किया उसी ने तुम्हें तुम्हारा रूप दिया है.
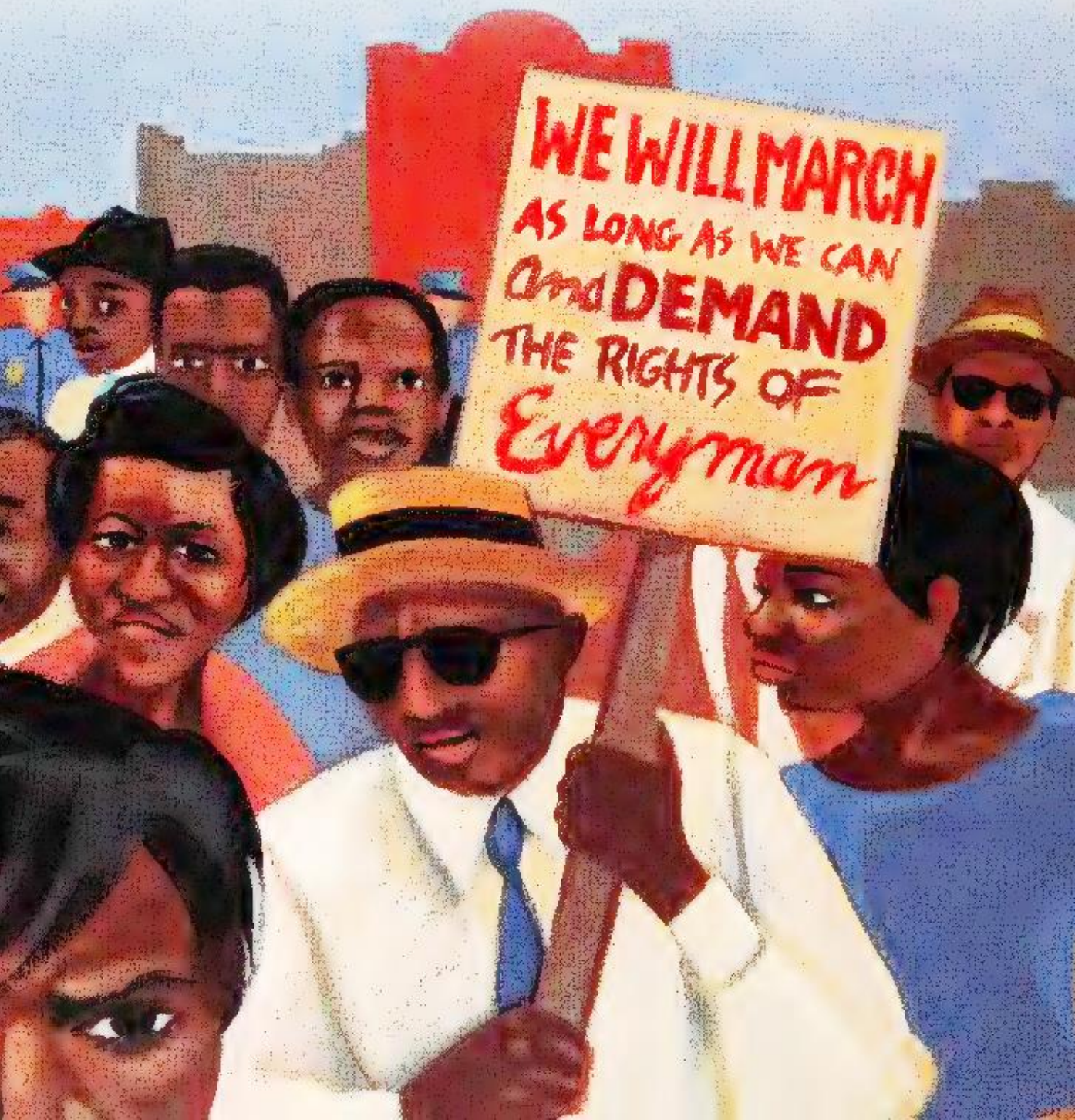
तुम्हारे नाना और नानी का विश्वास कि ज्ञान ही स्वतंत्रता है जो सबको उपलब्ध होना चाहिए उसी विश्वास ने तुम्हें तुम्हारा रूप दिया है.
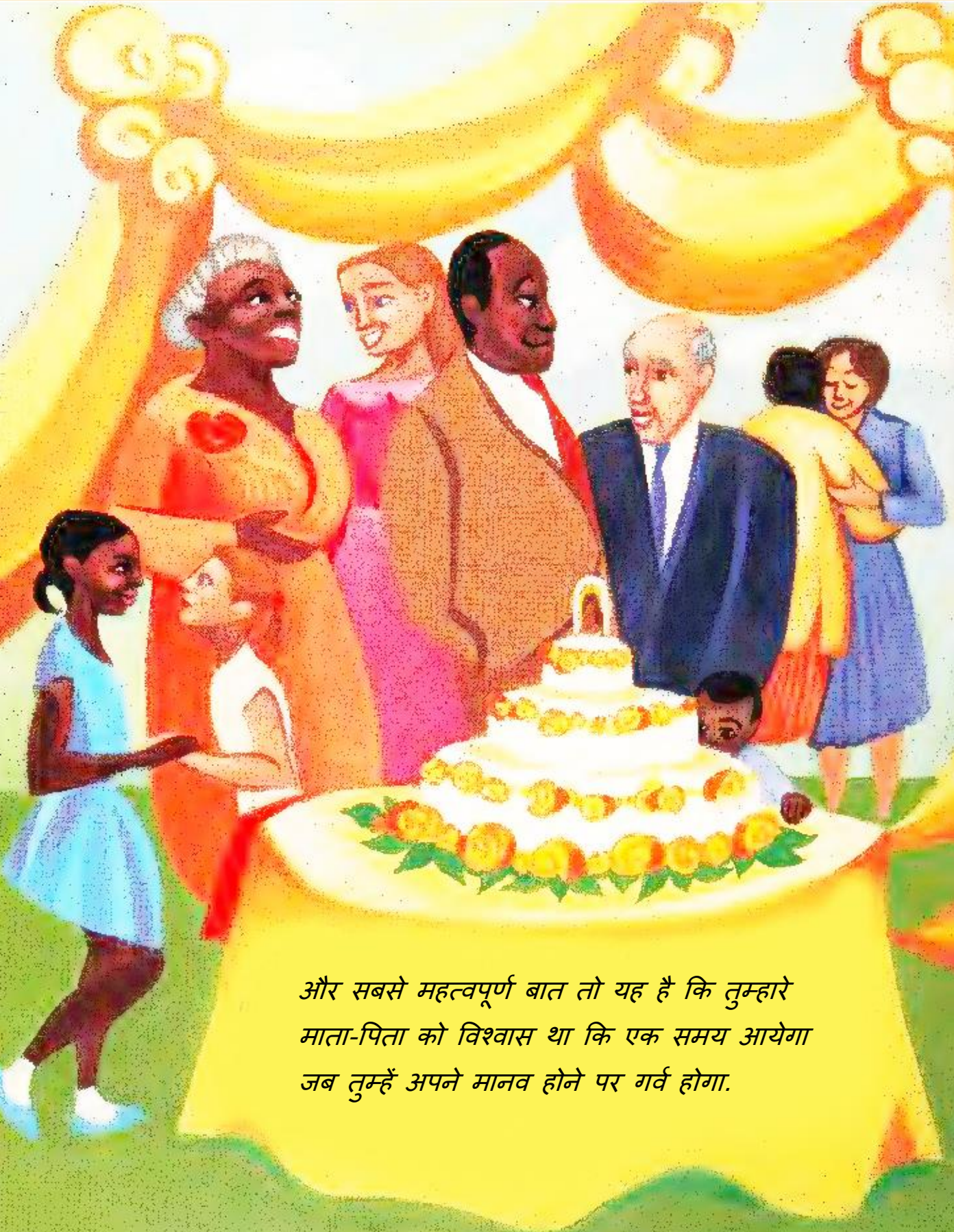
और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तुम्हारे माता-पिता को विश्वास था कि एक समय आयेगा जब तुम्हें अपने मानव होने पर गर्व होगा.
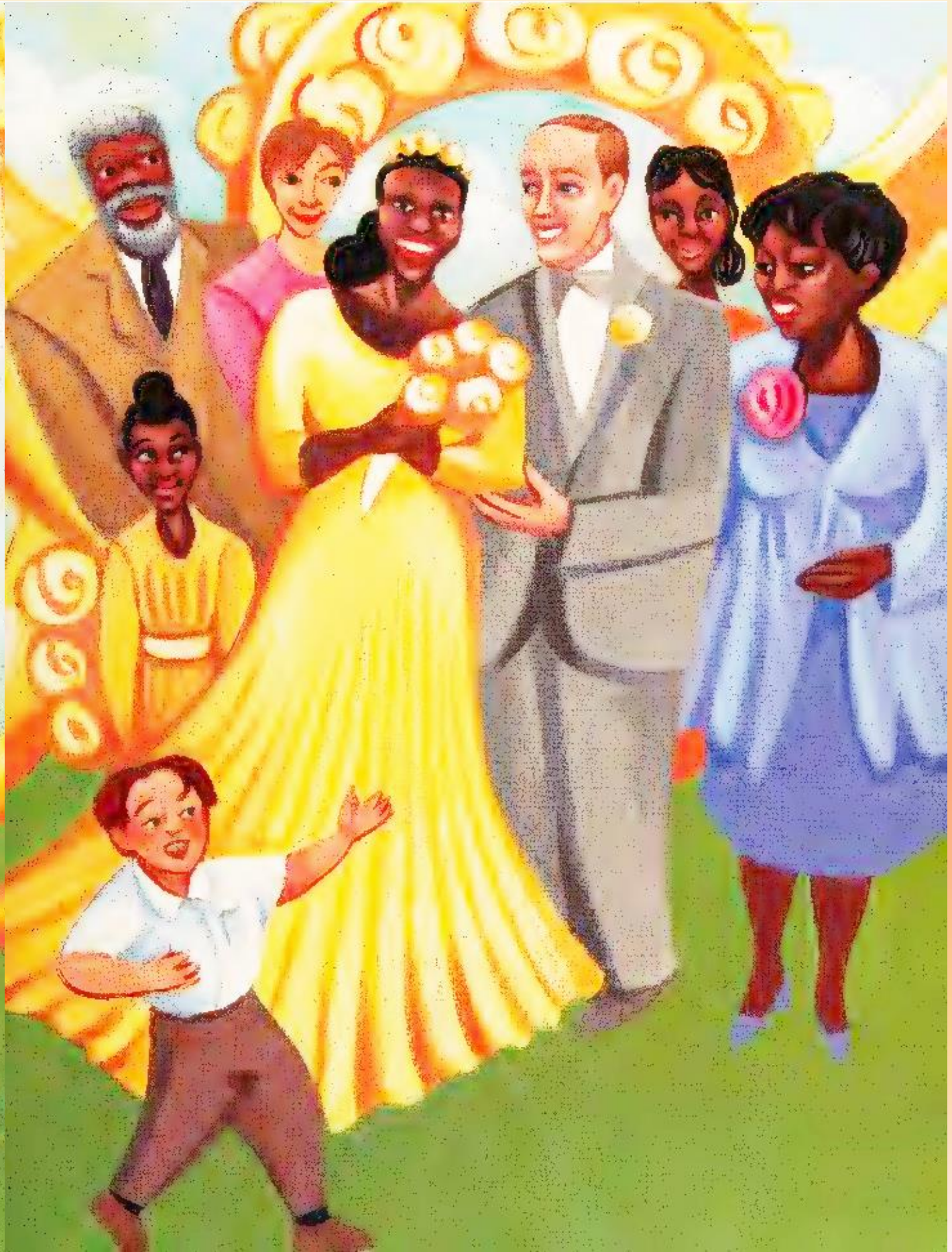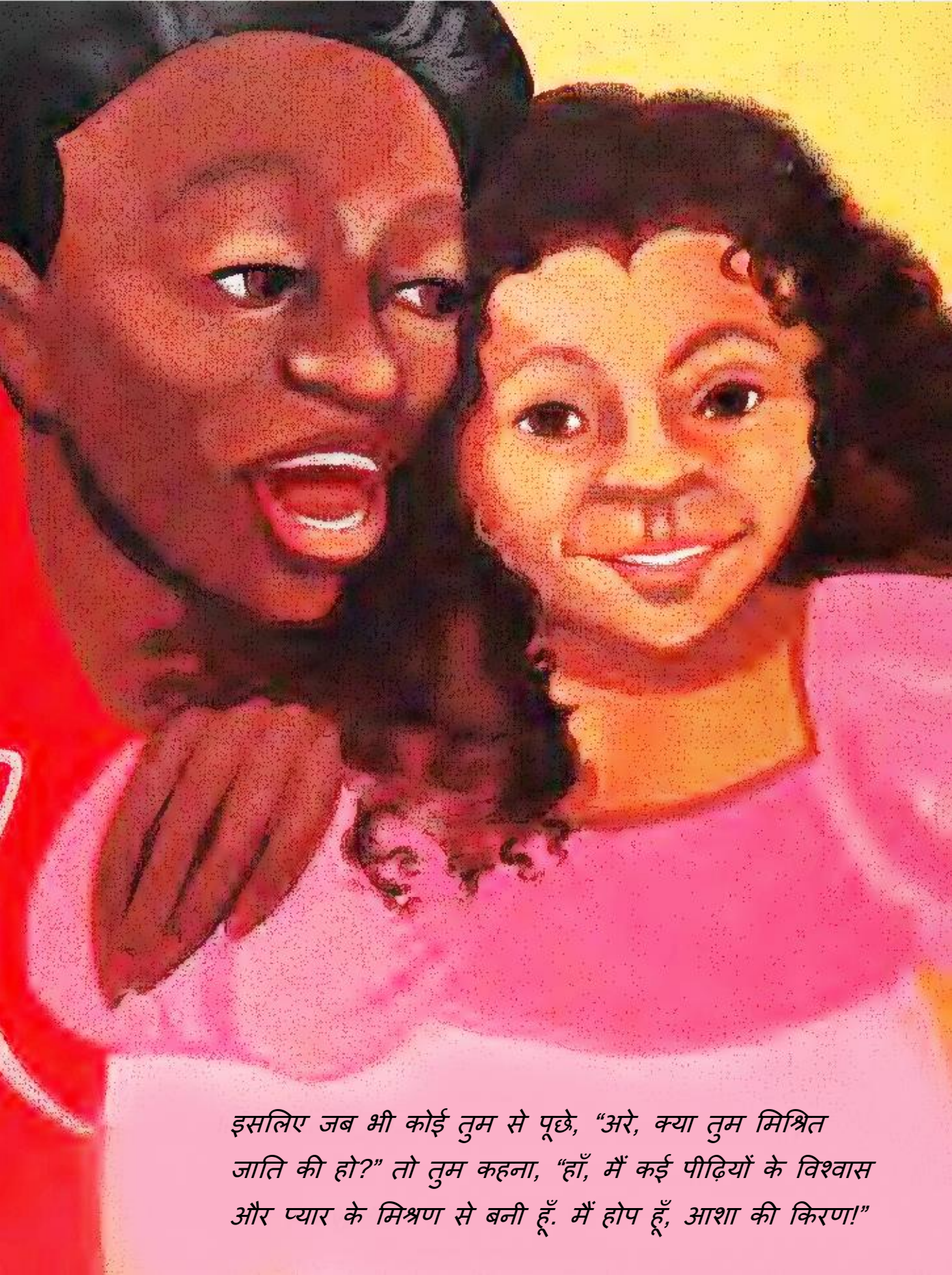
इसलिए जब भी कोई तुम से पूछे, "अरे, क्या तुम मिश्रित जाति की हो?" तो तुम कहना, "हाँ, मैं कई पीढ़ियों के विश्वास और प्यार के मिश्रण से बनी हूँ. मैं होप हूँ, आशा की किरण!"

इतना कह कर पूगी बुआ ने मुझे बिस्तर में लिटा दिया. मुझे प्यार से चूमा और कहा, "शुभ रात्रि, होप."
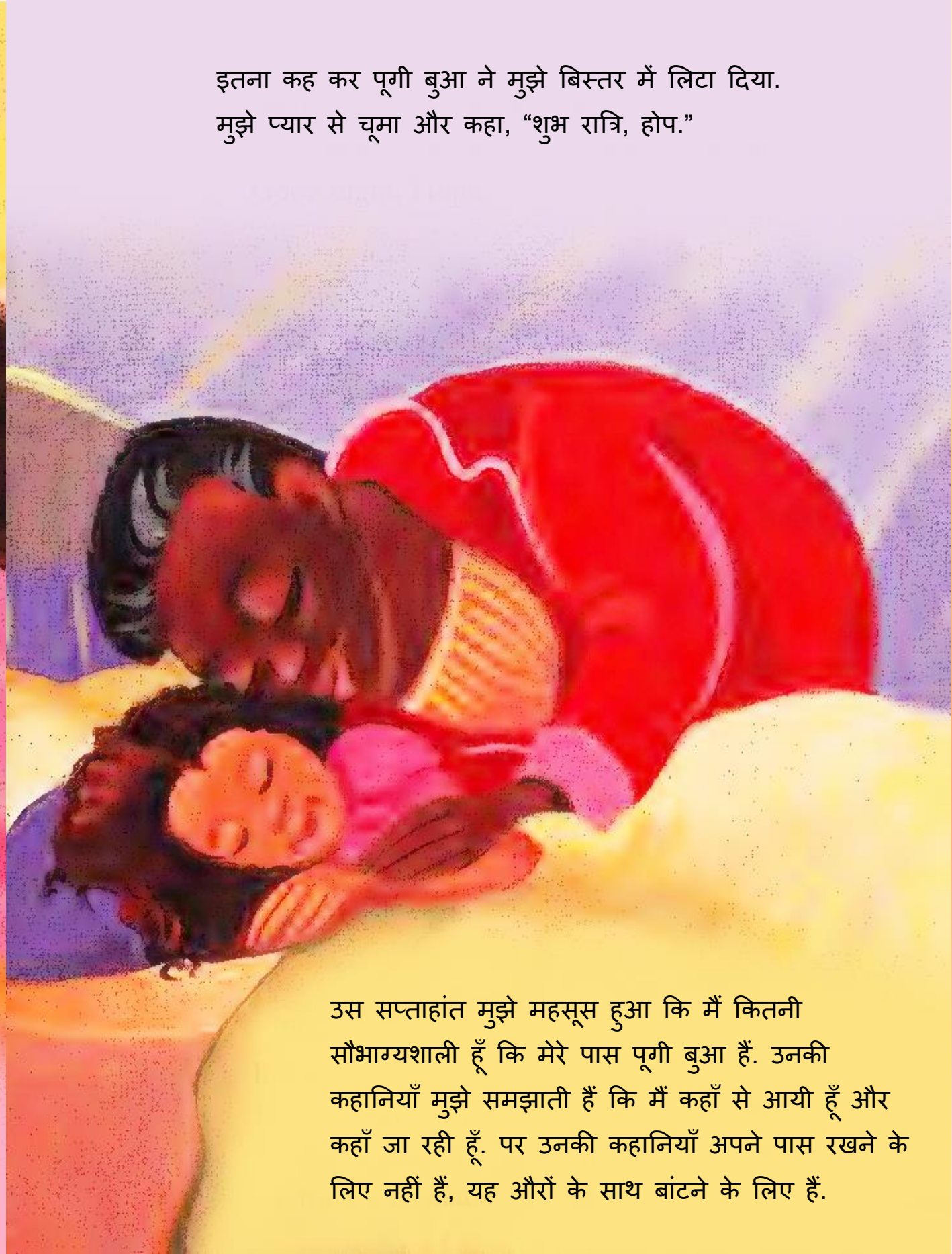
उस सप्ताहांत मुझे महसूस हुआ कि मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ कि मेरे पास पूगी बुआ हैं. उनकी कहानियाँ मुझे समझाती हैं कि मैं कहाँ से आयी हूँ और कहाँ जा रही हूँ. पर उनकी कहानियाँ अपने पास रखने के लिए नहीं हैं, यह औरों के साथ बांटने के लिए हैं.